A Pratibha Spandan's Journal
HILL QUEST
(Multidisciplinary National Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2454-3144 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2025
http://hillquest.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

हिमाचल प्रदेश के स्नातक स्तर के संगीत के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर गृह वातावरण के प्रभाव का अध्ययन

DR. MRITUNJAY SHARMA[1] & MS. ANUPMA SHARMA[2]

1Assistant Professor, Department of Performing Arts (Music), Himachal Pradesh University, Shimla, H.P.
2 Research Scholar, Department of Performing Arts (Music), Himachal Pradesh University, Summerhill, Shimla

OPEN ACCESS CC BY

सार

इस शोध का उद्देश्य हिमाचल प्रदेश के स्नातक स्तर के संगीत के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर गृह वातावरण के नियंत्रण आयाम के प्रभाव का अध्ययन करना रहा। इसके लिए हिमाचल प्रदेश स्नातक स्तर के संगीत के विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में 400 विद्यार्थियों (छात्रों व छात्राओं) को लिया गया। सर्वेक्षण विधि द्वारा इक्टठे किए गए दत्त सामग्री के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि निम्न, औसत तथा उच्च नियंत्रण वाले गृह वातावरण से संबंधित संगीत के विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि (संगीत प्रदर्शन) प्राप्तांकों का मध्यमान 71.89, 68.89, 62.54 रहा। निम्न और औसत नियंत्रण वाले गृह वातावरण से संबंधित संगीत के विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि (संगीत प्रदर्शन) प्राप्तांकों के मध्य 'टी' का मान 4.14 है जो सार्थकता के 0.01 स्तर पर सार्थक है। निम्न और उच्च नियंत्रण वाले गृह वातावरण से संबंधित संगीत के विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि (संगीत प्रदर्शन) प्राप्तांकों के मध्य 'टी' का मान 12.98 है जो सार्थकता के 0.01 स्तर पर सार्थक है। औसत और उच्च नियंत्रण वाले गृह वातावरण से संबंधित संगीत के विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि (संगीत प्रदर्शन) प्राप्तांकों के मध्य 'टी' का मान 8.37 है जो सार्थकता के 0.01 स्तर पर सार्थक है। अत: यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि गृह वातावरण में नियंत्रण बढना, शैक्षणिक उपलब्धि में गिरावट का कारण हो सकता है।

कुंजी शब्द: *गृह वातावरण, नियंत्रण, सांगीतिक अभिवृत्ति, शास्त्रीय संगीत।*

गृह वातावरण तथा संगीत

संगीत की कला केवल व्यक्तिगत प्रतिभा या गुरु के शिक्षण पर निर्भर नहीं करती; यह उस अदृश्य नींव पर खड़ी होती है जिसे 'गृह वातावरण' या घर का माहौल कहते हैं। किसी भी बच्चे के लिए, घर उसकी पहली पाठशाला, उसकी पहली श्रवण भूमि और उसकी पहली अभ्यास स्थली होता है। यह वह सुरक्षित आश्रय होता है जहाँ प्रतिभा को न केवल पहचान मिलती है, बल्कि उसे निर्बाध रूप से पोषित होने का अवसर भी प्राप्त होता है। संगीत की उपलब्धि, जिसे हम सार्वजनिक प्रदर्शन या उच्च स्तरीय निपुणता के रूप में देखते हैं, वास्तव में घर की दीवारों के भीतर बुने गए सूक्ष्म धागों का परिणाम होती है।

एक संगीत-उन्मुख गृह वातावरण का तात्पर्य केवल महंगे वाद्य यंत्रों या शास्त्रीय संगीत की सीडी के संग्रह से नहीं है; इसका गहरा अर्थ परिवार के सदस्यों के दृष्टिकोण और व्यवहार में निहित है। यदि माता-पिता स्वयं संगीत के प्रति आदर रखते हैं, यदि घर में नियमित रूप से संगीत सुना जाता है, चाहे वह शास्त्रीय हो, लोक हो या भक्तिमय, तो बच्चा अनजाने में ही ताल, लय और स्वर के व्याकरण को आत्मसात करना शुरू कर देता है। गर्भ संस्कार से लेकर शैशवावस्था तक, ध्वनियों का यह संवेदी अनुभव बच्चे के मस्तिष्क में एक संगीतमय सांचा तैयार करता है। जिन घरों में बड़े-बुजुर्ग स्वयं गाते-गुनगुनाते हैं, या जहाँ प्रतिदिन पूजा-पाठ में भजन-कीर्तन की परंपरा है, वहाँ संगीत एक विषय न रहकर जीवनशैली का अभिन्न अंग बन जाता है। इस तरह के वातावरण में पलने वाला बच्चा संगीत को एक बोझ या एक अतिरिक्त पाठ्येतर गतिविधि के रूप में नहीं देखता, बल्कि उसे अपनी स्वाभाविक अभिव्यक्ति का माध्यम मानता है। यह सहज स्वीकृति ही आगे चलकर उसकी संगीत साधना को दृढ़ता प्रदान करती है।

संगीत की उपलब्धि को सुनिश्चित करने में घर की भौतिक और भावनात्मक दोनों तरह की संरचनाएँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। रियाज़ के लिए एक शांत, समर्पित स्थान का होना अत्यंत आवश्यक है। यह स्थान ऐसा हो जहाँ विद्यार्थी बिना किसी भय या संकोच के घंटों अभ्यास कर सके। एक ऐसा कमरा जहाँ वाद्य यंत्र सजे हों, दर्पण हो और कोई बाहरी हस्तक्षेप न हो, वहाँ अभ्यास एक 'साधना' में परिवर्तित हो जाता है। इसके विपरीत, यदि बच्चे को हर बार अपने वाद्य यंत्र को निकालकर, जोड़कर, और फिर रियाज़ के बाद समेटकर रखना पड़ता है, तो यह प्रक्रिया ही उसकी निरंतरता में बाधक बन जाती है। निरंतरता, जो रियाज़ का मूल मंत्र है, गृह वातावरण की संरचना पर निर्भर करती है। यदि परिवार के सदस्य बच्चे के अभ्यास के समय का सम्मान करते हैं और उस समय घर में शोरगुल या टीवी से परहेज़ करते हैं, तो यह मौन समर्थन ही बच्चे के संगीत के प्रति समर्पण को दोगुना कर देता है।

इसके अतिरिक्त, माता-पिता की अपेक्षाओं और उनके प्रोत्साहन के बीच एक नाजुक संतुलन साधना भी आवश्यक है। कई बार अत्यधिक दबाव बच्चे को संगीत से विमुख कर देता है। सफल संगीत उपलब्धि उन घरों में अधिक देखने को मिलती है जहाँ अभ्यास को अनुशासन के साथ-साथ आनंद और रचनात्मकता के रूप में देखा जाता है। जब बच्चे को उसके छोटे-छोटे प्रयासों के लिए भी सराहना मिलती है, जब उसके प्रदर्शन को परिवार के भीतर एक महत्वपूर्ण घटना के रूप में मनाया जाता है, तब बच्चे का आत्मविश्वास आकाश छूने लगता है। यह भावनात्मक सुरक्षा उसे सार्वजनिक मंच पर होने वाली आलोचना या असफलता का सामना करने के लिए तैयार करती है। घर वह प्रयोगशाला है जहाँ प्रयोग करने की पूर्ण स्वतंत्रता होती है।

गृह वातावरण का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू आर्थिक और सामाजिक समर्थन है। संगीत एक महँगी कला हो सकती है, जिसमें अच्छे वाद्य यंत्रों, गुरु के शुल्क और कार्यशालाओं में भाग लेने की आवश्यकता होती है। एक सहायक गृह वातावरण इन आर्थिक बाधाओं को दूर करने का प्रयास करता है, संगीत को एक 'शौक' नहीं, बल्कि एक 'निवेश' के रूप में देखता है। सामाजिक समर्थन में न केवल परिवार के सदस्य, बल्कि आस-पड़ोस और विस्तारित रिश्तेदार भी शामिल होते हैं। यदि कोई बच्चा किसी गैर-संगीतज्ञ परिवार में जन्म लेता है, लेकिन उसके माता-पिता संगीत के शिक्षकों और अन्य विद्यार्थियों के साथ संबंध स्थापित करते हैं, तो वे एक वैकल्पिक 'संगीत परिवार' का निर्माण करते हैं जो बच्चे को आवश्यक प्रेरणा प्रदान करता है।

महान संगीत की उपलब्धि केवल अभ्यास की कठोरता पर नहीं, बल्कि उस भावनात्मक गहराई पर आधारित होती है जो कलाकार अपने जीवन के अनुभवों से खींचता है। गृह वातावरण ही वह प्राथमिक स्रोत है जहाँ खुशी, दुख, संघर्ष और विजय की कहानियाँ बुनी जाती हैं, और ये भावनाएँ ही कलाकार के संगीत में उतरती हैं। संगीत की सर्वोच्च सिद्धि के पीछे हमेशा एक ऐसे घर का त्याग, समर्थन और अटूट विश्वास छिपा होता है जिसने संगीत को एक आवश्यक कर्म और जीवन का उद्देश्य माना हो। यह वातावरण ही वह 'तपस्या स्थल' है जहाँ प्रतिभा, लगन और मार्गदर्शन का संगम होता है, और इसी संगम से संगीत की महान धारा फूट पड़ती है।

गृह वातावरण और शैक्षिक उपलब्धि

शैक्षिक उपलब्धि किसी व्यक्ति की औपचारिक शिक्षा प्रणाली में प्राप्त की गई सफलता और प्रदर्शन को दर्शाती है। यह न केवल ग्रेड और अंकों तक सीमित है, बल्कि इसमें ज्ञान, कौशल, समझ और सामाजिक-भावनात्मक विकास भी शामिल है। जहाँ एक ओर विद्यालय, शिक्षक और पाठ्यक्रम शैक्षिक सफलता के महत्वपूर्ण घटक हैं, वहीं दूसरी ओर घर का वातावरण भी उतना ही, यदि नहीं तो उससे भी अधिक, निर्णायक भूमिका निभाता है। घर वह पहली प्रयोगशाला है जहाँ एक बच्चे का व्यक्तित्व, उसका आत्म-विश्वास और सीखने के प्रति उसका रवैया आकार लेता है। एक बच्चे के जीवन के शुरुआती और सबसे महत्वपूर्ण वर्ष घर पर ही बीतते हैं, और इसी दौरान उसकी सीखने की नींव पड़ती है। घर का माहौल उसकी जिज्ञासा को पोषित कर सकता है या उसे दबा सकता है, उसकी प्रेरणा को बढ़ा सकता है या उसे खत्म कर सकता है। के.एस. मिश्रा द्वारा विकसित गृह वातावरण सूची एक ऐसा वैज्ञानिक उपकरण है जो घर के इसी मनोवैज्ञानिक और सामाजिक वातावरण का मूल्यांकन करता है। यह 10 प्रमुख आयामों के माध्यम से माता-पिता और बच्चे के बीच की जटिल बातचीत को मापता है।

गृह वातावरण के आयाम

- नियंत्रण: इस आयाम का अर्थ है माता-पिता द्वारा बच्चे के व्यवहार, गतिविधियों और निर्णयों पर अत्यधिक नियंत्रण स्थापित करना। यह दर्शाता है कि माता-पिता बच्चे के लिए सभी नियम और कायदे बनाते हैं और उनसे बिना किसी सवाल के उनका पालन करने की उम्मीद करते हैं। उदाहरण के लिए, वे यह तय करते हैं कि बच्चे को क्या पढ़ना है, किस समय पढ़ना है, और कौन से शौक अपनाने हैं, यहाँ तक कि उसकी पढ़ाई का तरीका भी वही तय करते हैं।
- सुरक्षा: यह आयाम दर्शाता है कि माता-पिता अपने बच्चे को हर तरह के जोखिम, चुनौतियों और मुश्किलों से बचाने की कोशिश करते हैं। यह देखभाल का एक अति-विस्तारित रूप है जो बच्चे को बाहरी दुनिया से अलग-थलग कर देता है। उदाहरण के लिए, एक माता-पिता अपने बच्चे को किसी कठिन खेल में भाग लेने से रोक सकते हैं या कक्षा में गलती करने के डर से उसे प्रश्न पूछने से हतोत्साहित कर सकते हैं।

- दंड: यह आयाम शारीरिक, मौखिक या भावनात्मक दंड के उपयोग को दर्शाता है जब बच्चा नियमों का उल्लंघन करता है या अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतरता। इसमें मारना, चिल्लाना, अपमानजनक शब्दों का उपयोग करना या भावनात्मक रूप से ब्लैकमेल करना शामिल हो सकता है।
- अनुरूपता: इस आयाम का अर्थ है माता-पिता द्वारा बच्चे पर परिवार या सामाजिक मानदंडों के अनुसार व्यवहार करने का दबाव डालना। बच्चे से अपेक्षा की जाती है कि वह बिना किसी सवाल के इन मानदंडों का पालन करे, जैसे कि हमारे परिवार में कोई भी डॉक्टर के अलावा कुछ और नहीं बनता।
- सामाजिक अलगाव: यह आयाम घर में सामाजिक बातचीत और बाहरी दुनिया के साथ बच्चे के संपर्क की कमी को दर्शाता है। यह तब होता है जब बच्चा अपने दोस्तों के साथ खेलने या सामाजिक गतिविधियों में भाग लेने में असमर्थ होता है क्योंकि माता-पिता उसे रोकते हैं या उसे अवसर नहीं देते हैं।
- पुरस्कार: यह आयाम अच्छे व्यवहार या शैक्षणिक प्रदर्शन के लिए सकारात्मक सुदृढीकरण और प्रशंसा के उपयोग को दर्शाता है। इसमें मौखिक प्रशंसा (बहुत अच्छा किया), विशेष विशेषाधिकार (जैसे, एक पसंदीदा फिल्म देखना) या उपहार शामिल हो सकते हैं।
- विशेषाधिकारों का हनन: यह आयाम बच्चे के नियमों का उल्लंघन करने पर अस्थायी रूप से उसके विशेषाधिकारों (जैसे, वीडियो गेम खेलने का समय या टीवी देखना) को छीनने की प्रक्रिया को संदर्भित करता है। यह एक अनुशासनात्मक तकनीक है।
- पालन-पोषण: यह आयाम बच्चे को भावनात्मक समर्थन, प्यार, देखभाल और स्वीकृति प्रदान करने को दर्शाता है। यह घर के वातावरण में गर्मजोशी और स्नेह का एक माप है। इसमें बिना शर्त प्यार और सम्मान शामिल है।
- अस्वीकृति: यह आयाम बच्चे को भावनात्मक रूप से अस्वीकार करने या उपेक्षित करने को दर्शाता है, जिसमें आलोचना, निंदा और स्नेह की कमी शामिल है। यह बच्चे के प्रयासों को कम आंकने, उसकी भावनाओं को नजरअंदाज करने और उसे यह महसूस कराने जैसा है कि वह माता-पिता के प्यार के लायक नहीं है।
- अनुज्ञा: यह आयाम नियमों, सीमाओं और अनुशासन की कमी को दर्शाता है। माता-पिता बच्चे के व्यवहार को नियंत्रित करने में बहुत कम या कोई प्रयास नहीं करते हैं। वे बच्चे को पूरी स्वतंत्रता देते हैं, अक्सर बिना किसी मार्गदर्शन या संरचना के।

आयामों का परस्पर संबंध

यह समझना महत्वपूर्ण है कि गृह वातावरण सूची के आयाम एक-दूसरे से स्वतंत्र नहीं हैं, बल्कि एक जटिल जाल की तरह जुड़े हुए हैं। एक आयाम का प्रभाव दूसरे आयाम से प्रभावित हो सकता है। उदाहरण के लिए:

- एक घर में जहाँ पालन-पोषण का स्तर उच्च है, वहाँ दंड या विशेषाधिकारों का हनन का उपयोग भी कम हानिकारक हो सकता है। पालन-पोषण बच्चे को यह विश्वास दिलाता है कि अनुशासन का उद्देश्य उसे सुधारना है, न कि उसे अस्वीकार करना।
- इसी तरह, पुरस्कार का प्रभावी उपयोग अनुज्ञा के अभाव को संतुलित कर सकता है, क्योंकि यह बच्चे को बिना किसी कठोर दंड के सही दिशा में प्रेरित करता है।
- एक नकारात्मक आयाम जैसे नियंत्रण को पालन-पोषण के साथ जोड़कर सकारात्मक बनाया जा सकता है, जहाँ माता-पिता मार्गदर्शन तो देते हैं, लेकिन प्यार और समझ के साथ।

संतुलन का महत्व

शैक्षिक उपलब्धि को अधिकतम करने के लिए, माता-पिता को इन आयामों के बीच एक नाजुक संतुलन स्थापित करने की आवश्यकता है। यह एक ऐसा माहौल है जो न तो बहुत सख्त हो और न ही बहुत ढीला।

- नियंत्रण और स्वतंत्रता: अत्यधिक नियंत्रण के बजाय, माता-पिता को सही मात्रा में मार्गदर्शन और स्वायत्तता प्रदान करनी चाहिए। बच्चों को अपनी पढ़ाई और रुचियों के बारे में निर्णय लेने की स्वतंत्रता देना आवश्यक है।

- सुरक्षा और जोखिम: बच्चों को सुरक्षित महसूस कराना महत्वपूर्ण है, लेकिन उन्हें कुछ हद तक जोखिम लेने और अपनी गलतियों से सीखने की अनुमति भी देना चाहिए। यह लचीलापन विकसित करने में मदद करता है।
- अनुशासन और पालन-पोषण: एक प्रभावी गृह वातावरण में, अनुशासन (जैसे विशेषाधिकारों का हनन) को हमेशा पालन-पोषण और प्यार के साथ जोड़ा जाना चाहिए। अनुशासन का उद्देश्य सीखना होना चाहिए, न कि दंड देना।
- प्रेरणा और अपेक्षाएँ: माता-पिता को अपने बच्चे की रुचियों और क्षमताओं के अनुसार यथार्थवादी अपेक्षाएँ रखनी चाहिए और उन्हें बाहरी पुरस्कारों के बजाय आंतरिक प्रेरणा के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

के.एस. मिश्रा का गृह वातावरण सूची हमें यह समझने में मदद करता है कि घर का वातावरण शैक्षिक उपलब्धि पर कितना गहरा प्रभाव डालता है। यह सिर्फ़ एक कमरा, किताबें या शैक्षिक संसाधन नहीं हैं, बल्कि यह घर का मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक माहौल है जो एक बच्चे के सीखने के अनुभव को आकार देता है। एक सकारात्मक और संतुलित गृह वातावरण, जो पालन-पोषण और पुरस्कार से प्रोत्साहनात्मक आयामों पर केंद्रित हो, और नियंत्रण, दंड और अस्वीकृति जैसे नकारात्मक आयामों को कम करे, एक बच्चे को उसकी पूरी शैक्षणिक क्षमता तक पहुंचने में मदद कर सकता है। यह माता-पिता और अभिभावकों के लिए एक मार्गदर्शक है कि वे अपने बच्चों के लिए एक ऐसा वातावरण कैसे बनाएं जो न केवल उनकी शैक्षणिक सफलता को बढ़ावा दे, बल्कि उन्हें जीवन के लिए एक आत्म-विश्वासी, जिज्ञासु और सफल व्यक्ति भी बनाए।

शोध का महत्व

संगीत एक प्रयोगात्मक विषय है। अतः इसमें प्रदर्शन का विशेष महत्त्व रहता है। इस बात के पर्याप्त प्रमाण हैं कि गृह वातावरण का छात्रों के परीक्षा में प्रदर्शन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। संगीत जैसे विषय में, जहाँ प्रदर्शन अत्यंत महत्वपूर्ण है और जहाँ छात्र को परीक्षक या परीक्षकों के समूह के समक्ष संगीत रचना, ताल, लय आदि पर अपनी महारत का प्रदर्शन करना होता है, ये कारक और भी अधिक प्रभावी भूमिका निभाते हैं। परिवार में तनाव और बच्चों पर माता-पिता का नियंत्रण, परिवार में लड़के और लड़की के अधिकारों और कर्तव्यों के बीच भेदभाव, माता-पिता द्वारा बच्चों को अस्वीकार करना और उन्हें दंडित करना, ऐसी घटनाएँ हैं जो हमारे तथाकथित प्रगतिशील समाज में भी तेज़ी से फैल रही हैं। इसलिए, वर्तमान अध्ययन, विशेष रूप से स्नातक स्तर के संगीत के विद्यार्थियों के संगीत प्रदर्शन (शैक्षणिक उपलब्धि) पर गृह वातावरण के प्रभावों का आकलन करने के लिए और भी अधिक प्रासंगिक है।

उद्देश्य

- स्नातक स्तर के संगीत के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर गृह वातावरण (नियंत्रित) के प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएं

- निम्न तथा औसत नियंत्रित गृह वातावरण से संबंधित स्नातक स्तर के संगीत के विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि प्राप्तांकों में सार्थक अंतर होगा
- निम्न तथा उच्च नियंत्रित गृह वातावरण से संबंधित स्नातक स्तर के संगीत के विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि प्राप्तांकों में सार्थक अंतर होगा
- औसत तथा उच्च नियंत्रित गृह वातावरण से संबंधित स्नातक स्तर के संगीत के विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि प्राप्तांकों में सार्थक अंतर होगा

शोध क्षेत्र: इस शोध कार्य का क्षेत्र हिमाचल प्रदेश के स्नातक स्तर के संगीत के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर गृह वातावरण के नियंत्रण आयाम के प्रभाव के सर्वेक्षणात्मक अध्ययन तक सीमित रहा।

चर: (क) स्वतंत्र चर: गृह वातावरण। (ख) आश्रित चर: संगीत प्रदर्शन।

न्यादर्श: हिमाचल प्रदेश के महाविद्यालयों के स्नातक स्तर के संगीत के 450 विद्यार्थियों को यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा लिया गया। इन 450 विद्यार्थियों में से 400 ने ही प्रश्नावलियों को पूर्ण रूप से भरा। अत: कुल 400 विद्यार्थियों को ही इस शोधकार्य के लिए चयनित किया गया। इनमें से छात्र तथा छात्राएं शामिल थीं।

हिमाचल प्रदेश के महाविद्यालयों के स्नातक स्तर के विद्यार्थी

क्रम	स्नातक	कुल संख्या
1	प्रथम वर्ष, द्वितीय वर्ष तथा तृतीय वर्ष	400

शोध विधि: इस शोध कार्य में सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया।

उपकरण: के.एस. मिश्रा की गृह वातावरण सूची

शोध प्रक्रिया: विभिन्न मनोवैज्ञानिक और जनसांख्यिकीय चरों पर आँकड़े एकत्र करने के लिए हिमाचल प्रदेश के महाविद्यालयों के प्रमुखों के साथ विद्यार्थियों को उपकरण प्रदान करने के लिए समय निर्धारित किया। गृह वातावरण सूची को परीक्षा से पहले दिए गए। विद्यार्थियों को सहज बनाया गया और उन्हें उपकरण और अध्ययन का मूल उद्देश्य समझाया गया। इसलिए विद्यार्थियों को यह आश्वासन देने में बहुत सावधानी रखी गई कि वे जो भी जानकारी प्रदान करेंगे, उसे पूरी तरह गोपनीय रखा जाएगा और इस जानकारी का उपयोग केवल शोध उद्देश्यों के लिए किया जाएगा। इसलिए नियमित परीक्षाओं के दौरान विद्यार्थियों के प्रदर्शन का अवलोकन किया गया। इससे मान्य और विश्वसनीय आँकड़े प्राप्त करने में भी मदद मिली क्योंकि वास्तविक परिस्थितियों में परीक्षण सबसे वांछनीय होता है क्योंकि इससे काफी हद तक मान्य परिणाम प्राप्त होते हैं। नमूने में शामिल सभी छात्रों को आँकड़ों के अंतिम विश्लेषण में शामिल नहीं किया जा सका क्योंकि उनमें से कुछ ने या तो सभी परीक्षण पूरे नहीं किए थे या में उपस्थित नहीं हुए थे। इस प्रकार अंतिम विश्लेषण के लिए केवल 400 विद्यार्थियों को ही शामिल किया जा सका।

स्नातक स्तर के संगीत के विद्यार्थियों के उच्च, औसत और निम्न नियंत्रण आयाम (गृह वातावरण) समूहों के मध्य शैक्षणिक उपलब्धि (संगीत प्रदर्शन) प्राप्तांकों की तुलना

स्नातक स्तर के संगीत के विद्यार्थियों के उच्च, औसत और निम्न नियंत्रण आयाम (गृह वातावरण) समूहों के मध्य शैक्षणिक उपलब्धि (संगीत प्रदर्शन) प्राप्तांकों का मध्यमान, विचलांक तथा 'टी' के मान निम्न तालिका में दिए गए हैं।

तालिका संख्या 1: स्नातक स्तर के संगीत के विद्यार्थियों के उच्च, औसत और निम्न नियंत्रण आयाम (गृह वातावरण) समूहों के मध्य शैक्षणिक उपलब्धि (संगीत प्रदर्शन) प्राप्तांकों का मध्यमान, विचलांक तथा 'टी'

समूह	मध्यमान 1	मध्यमान 2	विचलांक 1	विचलांक 2	'टी'
समूह 1 – समूह 2	71.89	68.78	5.31	5.67	4.14*
समूह 1 – समूह 3	71.89	62.54	5.31	5.23	12.98*
समूह 2 – समूह 3	68.78	62.54	5.67	5.23	8.37*

df = 214, * = 0.01 पर सार्थक, ** = 0.05 पर सार्थक, 0.01 स्तर पर 'टी' का मानक मूल्य = 2.58, 0.05 स्तर पर 'टी' का मानक मूल्य = 1.96

तालिका 1 से स्पष्ट है कि समूह 1 (निम्न नियंत्रण वाले गृह वातावरण से संबंधित संगीत के विद्यार्थियों) और समूह 2 (औसत नियंत्रण वाले गृह वातावरण से संबंधित संगीत के विद्यार्थियों) के मध्य 'टी' का मान 4.14 है जो सार्थकता के 0.01 स्तर के मानक मूल्य 2.58 से अधिक है। अत: यह सार्थकता के 0.01 स्तर पर सार्थक है। इसलिए परिकल्पना 'निम्न तथा औसत नियंत्रित गृह वातावरण से संबंधित स्नातक स्तर के संगीत के विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि प्राप्तांकों में सार्थक अंतर होगा', स्वीकार की गई। इस प्रकार, उपरोक्त विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि निम्न नियंत्रित तथा औसत नियंत्रित गृह वातावरण से संबंधित स्नातक स्तर के संगीत के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि (संगीत प्रदर्शन) में सार्थक रूप से अंतर है। निम्न नियंत्रित गृह वातावरण से संबंधित स्नातक स्तर के संगीत के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि (संगीत प्रदर्शन) का मध्यमान, औसत नियंत्रित गृह वातावरण से संबंधित स्नातक स्तर के संगीत के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि (संगीत प्रदर्शन) के मध्यमान से अधिक है। अत: यह व्याख्या की जा सकती है कि अधिक नियंत्रित गृह वातावरण से शैक्षणिक उपलब्धि में कमी पाई जाती है। अत: यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि गृह वातावरण में नियंत्रण बढना, शैक्षणिक उपलब्धि में गिरावट का कारण हो सकता है।

A Pratibha Spandan's Journal

HILL QUEST
(Multidisciplinary National Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2454-3144 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2025
http://hillquest.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि समूह 1 (निम्न नियंत्रण वाले गृह वातावरण से संबंधित संगीत के विद्यार्थियों) और समूह 3 (उच्च नियंत्रण वाले गृह वातावरण से संबंधित संगीत के विद्यार्थियों) के मध्य 'टी' का मान 12.98 है जो सार्थकता के 0.01 स्तर के मानक मूल्य 2.58 से अधिक है। अत: यह सार्थकता के 0.01 स्तर पर सार्थक है। इसलिए परिकल्पना 'निम्न तथा उच्च नियंत्रित गृह वातावरण से संबंधित स्नातक स्तर के संगीत के विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि प्राप्तांकों में सार्थक अंतर होगा', स्वीकार की गई। इस प्रकार, उपरोक्त विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि निम्न नियंत्रित तथा उच्च नियंत्रित गृह वातावरण से संबंधित स्नातक स्तर के संगीत के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि (संगीत प्रदर्शन) में सार्थक रूप से अंतर है। निम्न नियंत्रित गृह वातावरण से संबंधित स्नातक स्तर के संगीत के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि (संगीत प्रदर्शन) का मध्यमान, उच्च नियंत्रित गृह वातावरण से संबंधित स्नातक स्तर के संगीत के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि (संगीत प्रदर्शन) के मध्यमान से अधिक है। अत: यह व्याख्या की जा सकती है कि अधिक नियंत्रित गृह वातावरण से शैक्षणिक उपलब्धि में कमी पाई जाती है। अत: यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि गृह वातावरण में नियंत्रण बढना, शैक्षणिक उपलब्धि में गिरावट का कारण हो सकता है।

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि समूह 1 (निम्न नियंत्रण वाले गृह वातावरण से संबंधित संगीत के विद्यार्थियों) और समूह 3 (उच्च नियंत्रण वाले गृह वातावरण से संबंधित संगीत के विद्यार्थियों) के मध्य 'टी' का मान 8.37 है जो सार्थकता के 0.01 स्तर के मानक मूल्य 2.58 से अधिक है। अत: यह सार्थकता के 0.01 स्तर पर सार्थक है। इसलिए परिकल्पना 'औसत तथा उच्च नियंत्रित गृह वातावरण से संबंधित स्नातक स्तर के संगीत के विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि प्राप्तांकों में सार्थक अंतर होगा', स्वीकार की गई। इस प्रकार, उपरोक्त विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि औसत नियंत्रित तथा उच्च नियंत्रित गृह वातावरण से संबंधित स्नातक स्तर के संगीत के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि (संगीत प्रदर्शन) में सार्थक रूप से अंतर है। औसत नियंत्रित गृह वातावरण से संबंधित स्नातक स्तर के संगीत के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि (संगीत प्रदर्शन) का मध्यमान, उच्च नियंत्रित गृह वातावरण से संबंधित स्नातक स्तर के संगीत के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि (संगीत प्रदर्शन) के मध्यमान से अधिक है। अत: यह व्याख्या की जा सकती है कि अधिक नियंत्रित गृह वातावरण से शैक्षणिक उपलब्धि में कमी पाई जाती है। यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि गृह वातावरण में नियंत्रण बढना, शैक्षणिक उपलब्धि में गिरावट का कारण हो सकता है।

ग्राफ संख्या 1(A): स्नातक स्तर के संगीत के विद्यार्थियों के निम्न तथा औसत नियंत्रण आयाम (गृह वातावरण) समूहों के मध्य शैक्षणिक उपलब्धि (संगीत प्रदर्शन) प्राप्तांकों की तुलना

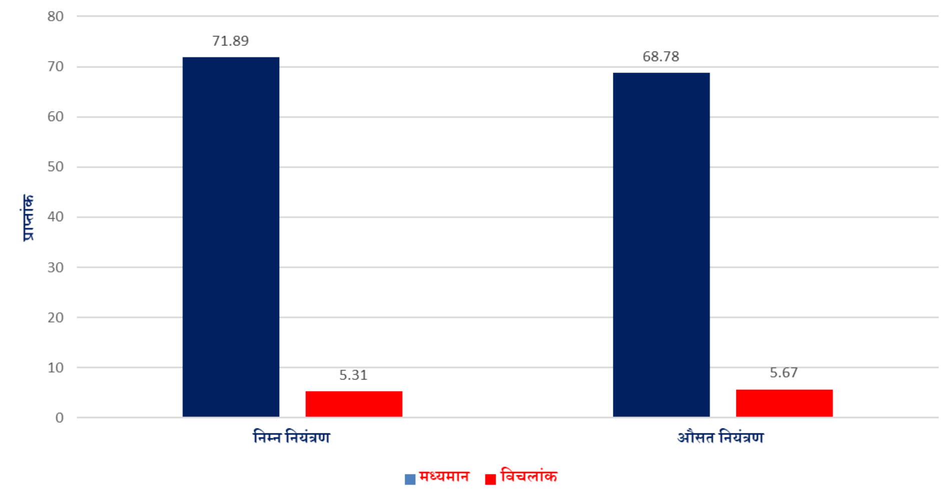

ग्राफ संख्या 1(B): स्नातक स्तर के संगीत के विद्यार्थियों के निम्न तथा औसत नियंत्रण आयाम (गृह वातावरण) समूहों के मध्य शैक्षणिक उपलब्धि (संगीत प्रदर्शन) प्राप्तांकों की तुलना

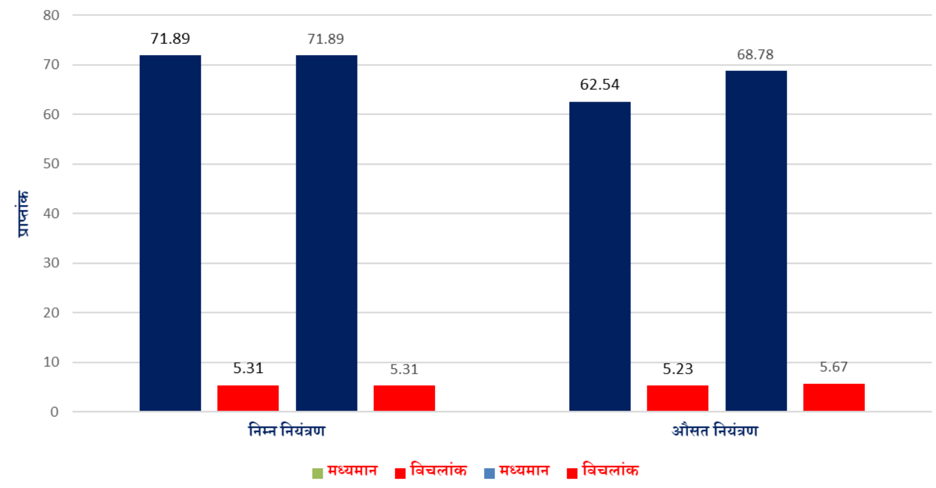

ग्राफ संख्या 1(C): स्नातक स्तर के संगीत के विद्यार्थियों के औसत तथा उच्च नियंत्रण आयाम (गृह वातावरण) समूहों के मध्य शैक्षणिक उपलब्धि (संगीत प्रदर्शन) प्राप्तांकों की तुलना

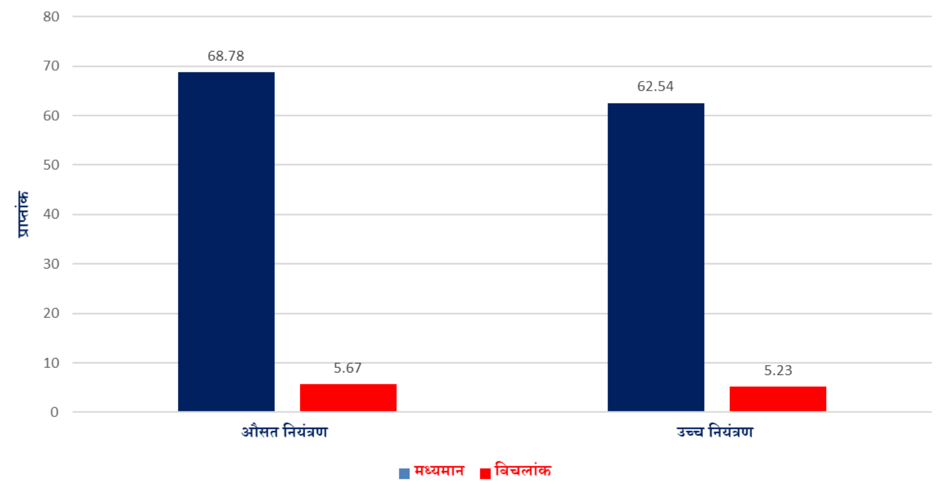

निष्कर्ष

आंकड़ों के विश्लेषण के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं:

- निम्न तथा औसत नियंत्रित गृह वातावरण से संबंधित स्नातक स्तर के संगीत के विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि प्राप्तांकों में सार्थक अंतर पाया गया। निम्न नियंत्रित गृह वातावरण से संबंधित स्नातक स्तर के संगीत के विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि, औसत नियंत्रित गृह वातावरण से संबंधित स्नातक स्तर के संगीत के विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि से अधिक पाई गई।
- निम्न तथा उच्च नियंत्रित गृह वातावरण से संबंधित स्नातक स्तर के संगीत के विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि प्राप्तांकों में सार्थक अंतर पाया गया। निम्न नियंत्रित गृह वातावरण से संबंधित स्नातक स्तर के संगीत के विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि, उच्च नियंत्रित गृह वातावरण से संबंधित स्नातक स्तर के संगीत के विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि से अधिक पाई गई।
- औसत तथा उच्च नियंत्रित गृह वातावरण से संबंधित स्नातक स्तर के संगीत के विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि प्राप्तांकों में सार्थक अंतर पाया गया। औसत नियंत्रित गृह वातावरण से संबंधित स्नातक स्तर के संगीत के विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि, उच्च नियंत्रित गृह वातावरण से संबंधित स्नातक स्तर के संगीत के विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि से अधिक पाई गई।

HILL QUEST
(Multidisciplinary National Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2454-3144 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2025
http://hillquest.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

जब बच्चे को अनुशासित करने के लिए माता-पिता के द्वारा उसके ऊपर कई प्रकार के कठोर प्रतिबंध लगा दिए जाते हैं तो उसका प्रदर्शन कम हो जाता है। बच्चों को बोलने पर ,अपनी बात रखने पर या कोई कार्य करने पर प्रतिबंध लगा दिए जाते हैं जिसके कारण वह तनाव में आ जाता है और उसका शैक्षणिक प्रदर्शन प्रभावित हो जाता है। यह स्पष्ट रूप से देखा गया है कि माता-पिता के द्वारा कठोर प्रतिबंध लगाने पर बच्चों का विकास प्रभावित हो जाता है और वह पढ़ाई में या अन्य परीक्षाओं में सही प्रकार से भाग नहीं ले पाते।

संदर्भ

उप्पल, सविता. (2003). संगीत शिक्षण व मनोविज्ञान, मार्डन बुक हाउस, चण्डीगढ़

उपाध्याय, डॉ. हरीश चन्द. (1990). सामाजिक सर्वेक्षण-अनुसंधान एवं सांख्यिकी, एटलांटिक पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्युटर्स, नई दिल्ली

कुलकर्णी, वसुधा. (1990). भारतीय संगीत एवं मनोविज्ञान, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर

गोयल, डॉ. विजय लक्ष्मी. (2009). सांगीतिक योग्यता में वंशानुक्रम एवं वातावरण का योगदान, सुभद्रा पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली

चक्रवर्ती, कविता. (1990). संगीत की मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि, सांइटिफिक पब्लिशर्स, जोधपुर

पाण्डेय, राम प्रसाद. (1980). सामान्य मनोविज्ञान, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

भार्गव, हर प्रसाद. (1976). मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन, भार्गव बुक हाउस राजामण्डी, आगरा

B Mimrot (2016), A Study of Academic Achievement Relation to Home Environment of Secondary School Students, International Journal of Indian Psychology, Volume 4, Issue 1, No. 79, ISSN:2348-5396 (e), ISSN:2349-3429 (p), DIP:18.01.084/20160304, ISBN:978-1-365-56745-2

Bradley, R.H. and Gladwell, B.M. Home environment and locus of control. *Jr. of Clinical Child Psychology,* 1979, 8 (2), 107-111.

184